हनुमान् चालिसा

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुर सुधारि ।
बरनऊँ रघुबर बिमल जस जो दायकु फल चारि ॥
बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौं पवनकुमार ।
बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं हरहु कलेस बिकार ॥

चौपाई
जय हनुमान ज्ञान गुन सागर जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ।
राम दूत अतुलित बल धामा अंजनिपुत्र पवनसुत नामा ॥

महाबीर बिक्रम बजरंगी कुमति निवार सुमति के संगी ।
कंचन बरन बिराज सुबेसा कानन कुंडल कुंचित केसा ॥

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै काँधे मूँज जनेऊ साजै । (5)
संकर सुवन केसरीनंदन तेज प्रताप महा जग बंदन ॥

विद्यावान गुनी अति चातुर राम काज करिबे को आतुर ।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया राम लखन सीता मन बसिया ॥

सूक्श्म रूप धरि सियहिं दिखावा बिकट रूप धरि लंक जरावा ।
भीम रूप धरि असुर सँहारे रामचंद्र के काज सँवारे ॥ (10)

लाय सजीवन लखन जियाये श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा नारद सारद सहित अहीसा ॥

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते । (15)
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥

तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना लंकेस्वर भए सब जग जाना ।
जुग सहस्र जोजन पर भानू लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ।
दुर्गम काज जगत के जेते सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥ (20)

राम दुआरे तुम रखवारे होत न आज्ञा बिनु पैसारे ।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना तुम रच्छक काहू को डर ना ॥

आपन तेज संहारो आपै तीनों लोक हाँक तें काँपै ।
भूत पिसाच निकट नहिं आवै महाबीर जब नाम सुनावै ॥

नासै रोग हरै सब पीरा जपत निरंतर हनुमत बीरा । (25)
संकट तें हनुमान छुड़ावै मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥

सब पर राम तपस्वी राजा तिन के काज सकल तुम साजा ।
और मनोरथ जो कोई लावै सोई अमित जीवन फल पावै ॥

चारों जुग परताप तुम्हारा है परसिद्ध जगत उजियारा ।

साधु संत के तुम रखवारे असुर निकंदन राम दुलारे ॥ (30)

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता अस बर दीन जानकी माता ।
राम रसायन तुम्हरे पासा सदा रहो रघुपति के दासा ॥

तुम्हरे भजन राम को पावै जन्म जन्म के दुख बिसरावै ।
अंत काल रघुबर पुर जाई जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥

और देवता चित्त न धरई हनुमत सेई सर्ब सुख करई । (35)
संकट कटै मिटै सब पीरा जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥

जै जै जै हनुमान गोसाईं कृपा करहु गुरु देव की नाईं ।
जो सत बार पाठ कर कोई छूटहि बंदि महा सुख होई ॥

जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा होय सिद्धि साखी गौरीसा ।
तुलसीदास सदा हरि चेरा कीजै नाथ हृदय मँह डेरा ॥(40)

दोहा
पवन तनय संकट हरन मंगल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप ॥

॥ सियावर रामचंद्रजी की जय पवन सुत हनुमान की जय बोलो भई सब संतन की जय !! ॥